प्रेस विज्ञप्ति

पटना, 29 जुलाई। विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस के अवसर पर आयोजित एक संगोष्ठी में एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (ADRI) की रिसर्च लीड और EIACP कोऑर्डिनेटर डॉ. मौसमी गुप्ता ने चेताया कि कोरोना वायरस का लोड हमारी जनसंख्या में तीन वर्षों के बाद भी कम नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि वायरस का प्रसार कोई तयशुदा पैटर्न नहीं अपनाता। उदाहरणस्वरूप, एक शहर जो किसी कोविड-प्रभावित शहर के समीप है, वहां कोई लक्षण नज़र नहीं आ सकते। यह कार्यक्रम ADRI द्वारा पटना विश्वविद्यालय और पटना साइंस कॉलेज के भूविज्ञान विभागों के सहयोग से आयोजित किया गया था, जिसका विषय था – "संरक्षण रणनीतियाँ: बिहार के लिए पारिस्थितिक संतुलन का मार्ग"।

डॉ. मौसमी ने महिलाओं में फेफड़ों के कैंसर की रोकथाम हेतु स्वच्छ ईंधन के उपयोग, बेहतर वेंटिलेशन और जागरूकता फैलाने की आवश्यकता बताई। उन्होंने यह अध्ययन महावीर कैंसर संस्थान के सहयोग से किया है।

राष्ट्रीय डॉल्फिन अनुसंधान केंद्र, पटना के कार्यवाहक निदेशक डॉ. गोपाल शर्मा और पटना विश्वविद्यालय के भूविज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. सैयद मोहम्मद सालिम ने वैश्विक तापमान वृद्धि पर अपने विचार साझा किए। डॉ. शर्मा ने बताया कि 1970 से 2016 तक वैश्विक तापमान में 1 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के कारण जैव विविधता में 68 प्रतिशत की कमी आई है। उन्होंने शहरी ताप द्वीप प्रभाव को कम करने के लिए वर्षा जल संचयन और छतों पर बागवानी को समाधान बताया।

प्रोफेसर सालिम ने बताया कि 1984 से अब तक आर्कटिक क्षेत्र में समुद्री बर्फ की परत पिघलने के कारण सिकुड़ रही है। यह ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण हो रहा है, जो इस क्षेत्र में उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की तुलना में चार गुना अधिक है। यह बदलाव भारत में मानसून को प्रभावित कर रहा है, जिससे कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है।

CSEC-ADRI में EIACP के प्रोग्राम ऑफिसर डॉ. सुनील कुमार गुप्ता ने बिहार सरकार द्वारा वायु प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए उठाए गए कदमों की सराहना की। उन्होंने बताया कि लगभग 50,000 परिवारों को एकीकृत चूल्हे और एलपीजी सिलेंडर प्रदान किए गए हैं। पटना में पीएम 2.5 प्रदूषण का मुख्य कारण उन्होंने परिवहन क्षेत्र को बताया।

पटना विश्वविद्यालय के भूविज्ञान विभाग के प्रोफेसर अतुल आदित्य पांडे ने बताया कि विश्वविद्यालय का शोध एजेंडा वर्ष 2000 के दशक की शुरुआत से ही "बिहार का शोक" कहे जाने वाले बाढ़ प्रवण कोसी नदी के व्यवहार पर केंद्रित रहा है। यह 1990 के दशक से जल संरक्षण और प्रबंधन से जुड़े अनुसंधान का हिस्सा रहा है।

पटना साइंस कॉलेज की प्राचार्या डॉ. अलका ने समाज से अपील की कि वह पुराने समय की ओर लौटे जब सड़कों के किनारे कच्चे किनारे होते थे और घरों में आंगन हुआ करते थे। पटना विश्वविद्यालय के भूविज्ञान के प्रोफेसर भावुक शर्मा ने बताया कि विश्व के हर चार में से एक शहर को जल संकट का सामना करना पड़ रहा है। भारत के 54 प्रतिशत हिस्से अत्यधिक जल तनाव का सामना कर रहे हैं, विशेष रूप से उत्तर बिहार में भूजल स्तर में तेजी से गिरावट हो रही है। इसलिए, वर्षा जल संचयन जैसे उपाय अब प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी बन गए हैं।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सुनील कुमार गुप्ता ने प्रस्तुत किया।

(अभिषेक प्रसाद)